Bodhi-Path Year 2020 July Issue Volume 19 Page No 1-4

सम्पादिका

डॉ संघमित्रा बौद्ध, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
ई-मेल:sanghmb@gamil.com

बौद्ध जगत् में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत–वर्ष में सारनाथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और पवित्रा तीर्थ–स्थल के रूप में परिगणित है, जहाँ भगवान बुद्ध ने ईसा पूर्व 588 के लगभग आषाढ़ पूर्णिमा के दिन पंचवर्गीय भिक्षुओं को बौद्ध धर्म का प्रथम उपदेश दिया था, जोकि ''धर्मचव्रफ प्रवर्तन'' की संज्ञा से अभिहित किया गया। साथ ही श्रावण प्रतिपदा से लेकर आश्विन पूर्णिमा तक स्थिर रूप से सारनाथ में धर्म उपदेश देते हुए वर्षावास किया। दीक्षा लेने वालों में प्रथम वाराणसी का श्रेष्ठिपुत्र यश था, जिसकी माता सुजाता ने भगवान् को उस वेला में खीर दी थी जिसे खाकर उन्होने परमबोधि का साक्षात्कार किया था। बुद्ध के जीवन की चार महत्त्वपूर्ण घटनाएँ– जन्म, सम्बोधि, धर्मचक्र प्रवर्तन तथा महापरिनिर्वाण। कालान्तर में बौद्धानुयायियों के लिए ये चार महत्त्वपूर्ण तीर्थ–स्थल बन गये। लुम्बिनी में जन्म ग्रहण करने के पश्चात् बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे बुद्धत्व की सम्प्राप्ति हुई। तत्पश्चात् धर्मचव्रफ प्रवर्तन के लिए इसिपतन मिगदाय सारनाथ को चुना और सर्वप्रथम पंचवर्गीय भिक्षुओं को ही बुद्ध धर्म में दीक्षित किया जीवन की अन्तिम वेला में महापरिनिर्वाण के लिए कुशीनारा निर्वाण–स्थल बना। उन पंचवर्गीय भिक्षुओं की दीक्षा के अर्न्तगत *चार आर्य सत्य* जिन्हें समस्त धर्मो का मूल कहा गया है और जितने कुशल धर्म हैं

वे सभी इन्हीं चार आर्य–सत्यों में निहित हैं (मज्झिम निकाय), *मध्यम प्रतिपदा* तथा *अष्टांगिक मार्ग* के रूप में जीवन की मूल समस्याओं व उनके समाधनों को समझाते हुए बौद्व धर्म की नीव रखी। यहीं सारनाथ में ही उन्होने संघ की भी स्थापना की। पंचवर्गीय भिक्षुओं, काशी के एक श्रेष्ठी पुत्र यश और उसके 54 साथियों को लेकर भगवान् बुद्व ने 60 भिक्षुओं, कहीं कहीं इनकी संख्या 61 बतायी गयी है, स्वंय को सम्मिलित करके, का संघ बनाया और उन्हें धर्म के प्रचारार्थ निम्नलिखित शब्दों में निर्देश देते हुए विभिन्न स्थानों पर भेजा

चरथ भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय देवमनुस्सानं। मा एकेन द्वे अगमित्थ।

सारनाथ में तथागत के विहार करने का उल्लेख हमें संयुक्त निकाय में मिलता है। यशकुल–पुत्र का सारनाथ में बौद्वधर्म की दीक्षा ग्रहण करने का उल्लेख दीर्घनिकाय के महापरिनिब्बान में और अंगुत्तरनिकाय के अट्ठकथा में तथागत के 46 वर्षावास करने का विवरण प्राप्त होता है जिसमें प्रथम वर्षावास वाराणसी के इसिपतन मिगदाय में ही व्यतीत किया था।

बुद्व–निर्वाण के लगभग दो सौ वर्ष पश्चात् सम्राट अशोक ने कई स्मारकों का निर्माण करवाया। उनमें से प्रमुख हैं–धर्मराजिक स्तूप, सिंह–स्तम्भ आदि। इस सिंह–स्तम्भ का उपरी भाग आधुनिक भारत द्वारा अपने

राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। उस पर बने धर्म–चक्र को भारतीय झण्डे के मध्य स्थान दिया गया है। संभवतः धम्मेख स्तूप की स्थापना भी अशोक ने ही करवाई थी। सारनाथ का पूर्ण अभ्युदय तो गुप्तकाल में हुआ था। उस समय यह मथुरा के अतिरिक्त उत्तर भारत में कला का सबसे बड़ा केन्द्र था । सारनाथ से प्राप्त, धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठे हुए भगवान बुद्व की भव्य मूर्ति देश की सबसे सुन्दर मूर्तियों में से एक है।

सारनाथ के स्मारकों में तीन स्तूप, दो मन्दिर, अशोक सिंह–स्तम्भ तथा सात विहार प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन कलाकृतियों का संग्रह समीप के एक संग्रहालय में है। आधुनिक इमारतों में मूलगन्ध कुटी विहार भी दर्शनीय है, जो महाबोधि सोसाइटी के संस्थापक अनागारिक धम्मपाल द्वारा बनवाया गया था। सारनाथ के प्रमुख स्मारकों के नाम निम्नलिखित है– 1. चौखण्डी स्तूप 2. धर्मराजिक स्तूप, 3. मूलगन्ध कुटी, 4. धम्मेख स्तूप– इसका प्रचीन नाम धर्मचक्र स्तूप था। इस स्तूप के अर्न्तगत एक शिलापटट् प्राप्त हुआ है जिस पर ''ये धर्मा हेतु प्रभवा'' इत्यादि बौद्वमंत्र अभिलिखित है। भगवान् बुद्व ने यहीं अपना प्रथम धर्मोपदेश दिया था, अतः लोग इसे साक्षात् बुद्व के धर्मकाय स्वरूप ही सम्मान देते हैं। 5. अशोक स्तम्भ।

श्रीलंका के अनुराधपुर के बोधिवृक्ष से प्राप्त शाखा को यहाँ सन् 1921 में रोपा गया, फलस्वरूप सारनाथ एक

बौद्व–तीर्थ–स्थल के रूप में समस्त संसार में प्रसिद्व हुआ, जिसकी गारिमा आज तक अक्षुण रूप में स्थित है। आज प्रत्येक बौद्व सारनाथ के दर्शन करना अपना परम सौभाग्य व कर्त्तव्य समझता है, जहाँ बुद्व धम्म व संघ की नींव पड़ी, जो सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा व शान्ति के धर्म के रूप में फैला। बुद्व के आगमन के समय सारनाथ अत्यन्त रमणीक वनचारी मृगों से सेवित सुरम्य वन था जिसे बुद्व ने अपनी कर्मभूमि बनाया।